उपसंहार

षष्ठम अध्याय

उपसंहार

उपेन्द्रनाथ अश्क जी गद्यात्मक और पद्यात्मक विधाओं के क्षेत्र में बहुमुखी साहित्यकार हैं। उन्होंने उर्दू कविता से लेखन आरंभ किया । साहित्य सम्राट प्रेमचंद जी के प्रोत्साहन से हिन्दी लेखन का आरंभ कर दिया । उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, संस्मरण, रेखाचित्र, आलोचना, संपादन आदि साहित्य विधा का सृजन कर आधुनिक युग में अपना अक्षय कीर्तिमान स्थापित कर लिया हैं ।

अश्क जी का जन्म पँजाब प्रांत के जालंधर नामक नगर में निम्न मध्य वर्ग के ब्राह्मण परिवार में हुआ । उनकी बी.ए.तक की शिक्षा जालंधर में ही हुई । अश्क जी महत्वाकांक्षी होने के कारण बचपन से ही अध्यापक बनने, लेखक और संपादक बनने, वक्ता, वकील, अभिनेता और डायरेक्टर आदि बनने के सपने देखा करते । बी.ए.पास करने के बाद अपने ही स्कूल में अध्यापक नियुक्त हो गये पर यह कार्य अधिक समय तक नहीं कर सके । साप्ताहिक पत्र मूचाले के संपादक बने । बम्बई आकर फिल्म कहानी, संवाद लेखन के साथ-साथ अभिनय भी किया । फिल्म जगत से दो ही साल में उब कर तथा लम्बी बिमारी के बाद फिर से लेखन और प्रकाशन के कार्य में अपने आप को झोंक दिया ।

अश्क जी का बचपन बडे अभाव में बीता ।अश्क जालंधर नगर के कल्लोवानो मुहल्ले के दूषित वातावरण में पले । उसका भी कुछ असर अश्क पर दिखायी देता हैं । पिता स्टेशन मास्टर थे । पिता का स्वभाव घर फूंक तमाशा देख का था । पिता शराबी, कबाबी, जुआरी, वेश्या गमन और यार-दोस्तों के साथ मौज मस्ती करने वाले थे । घर में बीवी बच्चों का क्या होगा इसकी उन्हें जरा सी भी फिकर न थी । हर समय बीवी बच्चों पर धौंस जमाना वे अपना कर्तव्य ही

समझाते थे । माता जी सब्र, संतोष और धर्मपरायण स्त्री थी । पति के अत्याचारों को चूपचाप सहती और पूर्व जन्म के कर्म का फल समझाती रही ।

अश्क जी का प्रथम पत्नी के मृत्यु के बाद जल्दी दूसरी शादी करने को मन नहीं करता था । परंतु परिस्थितिवश अनिच्छापूर्वक दूसरी शादी की । पत्नी से बेबनाव हो जाने के कारण उसे मायके भेजकर उन्होंने तीसरा विवाह कौशल्या जी से किया जो सभ्य परिवेश में पली, सुशिक्षित एवं सफल पत्नी हैं।

आधुनिक हिन्दी साहित्य की गद्यात्मक एवं पद्यात्मक विधाओं के क्षेत्र में बहुमुखी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय देते हुए उपेन्द्रनाथ अश्क जी ने अपना विशेष स्थान बना लिया है । अश्क जी के सृजनात्मक साहित्य में उपन्यास, कहानी, संग्रह, काव्य, नाटक, एकांकी, संस्मरण तथा रेखाचित्र आदि के रूप में बहुसंख्यक कृतियाँ उपलब्ध होती हैं । अश्क जी के व्यक्तित्व का द्योतन कराने वाली अनेक स्फुट रचनाएँ उपलब्ध होती हैं । अश्क जी के प्रतिनिधि कृतियों के रूप में ` सितारों के खेल `, ` गिरती दीवारें `, ` गर्म राख `, ` बड़ी-बड़ी आँखें `, ` पत्थर-अलपत्थर `, ` शहर में घूमता आईना `, ` एक नन्ही कन्दील `, ` बाँधो-न-नाव इस ठाँव ( दो भाग ), ` ,एक रात का नरक `, ` निमिषा `, ` आदि प्रमूख हैं । कहानी संग्रह में ` छींटे `, ` जुदाई के शाम का गीत `, ` बैंगन का पौधा `, ` अश्क जी की सर्व श्रेष्ठ कहानियाँ, ` निशानियाँ `, ` आकाशचारी `, ` साले साहब `, ` दो धारा `, ` रोब दाब `, ` वासना के स्वर ` आदि । उनके प्रमुख नाट्य कृतियों में ` जय पराजय `, ` आदि मार्ग `, ` स्वर्ग की झलक `, ` छठा बेटा `, ` कैद और उड़ान `, ` अंजो दीदी `, ` भँवर `, ` पैंतरे ` आदि । प्रमुख एकांकी संग्रह ` देवताओं की छाया में `, `` साहब को जुकाम है `, ` पक्का गाना `, ` अंधी गली `, ` नये रंग `, ` चरवाहे ` तथा ` पर्दा उठाओ ` । पर्दा गिराओ ` आदि प्रमूख सृजनात्मक रचनाएँ हैं ।

उपेन्द्रनाथ अश्क जी का प्रथम उपन्यास ` सितारों के खेल ` हैं । यह घटना प्रधान उपन्यास हैं । इस उपन्यास की समस्या प्रेम तथा विवाह की है । इस

कृति को आलोचकों ने रोमानी शैली का उपन्यास की उपमा दी हैं । इसके बाद अश्क ने यथार्थवादी परंपरा को अपनाकर` गिरती दीवारें ` उपन्यास का सृजनशिल जिसके अश्क ने यथार्थवादी उपन्यासकारों में अपना विशिष्ठ स्थान बना लिया । यह कृति अप्रतिम बन गयी हैं। इसका नायक चेतन हैं । अश्क ने इस नायक के माध्यम से अपने ही आपबीती का उद्घाटन किया हैं । या यों कहें की नायक चेतन नहीं बल्कि अश्क स्वत: ही चेतन बनकर अपनी आपबीती सुना रहे हैं । और यह आपबीती` गिरती दीवारें ` से आरंभ होकर` शहर में घूमता आईना`,` एक नन्हीं की नीलें`,` बाँधो न नाव इस ठाँव` तक अबाधगति से चल रही हैं । आज तक ३००० पृष्ठों तक लिखकर भी अपूर्ण ही है । नायक चेतन जवानी में ही हैं । और इसके अगली कड़ी की हम आशा करते हैं । अब अश्क जी पथ के दावे दार बन चुके हैं । मगर फिर भी उनकी लेखनी अबाध गति से चल रही हैं ।

इस शोध-प्रबन्ध का तृतीय अध्याय है,` कथा वस्तु की समीक्षा ।`

स्वतंत्रता पूर्व स्थिति में निम्न मध्य वर्गीय जीवन का यथार्थ ` शहर में घूमता आईना` उपन्यास मे अश्क जी ने किया हैं ।अश्क ने निम्न मध्य वर्गीय जिन्दगी को घुटन,निराशा,संघर्ष,अभाव,विवशता को मूर्त-रूप प्रदान किया हैं, साथ ही चेतन के मनोद्वन्द्वो को उकेरा हैं । अभावों और हीनता से ग्रस्त,कुंठित चेतन अपने परिवेश से परिचित है,परंतु अप्राप्य की प्राप्ती के लिए उसके मन में निरंतर द्वन्द्व,छटपटाहट और असंतोष रहता हैं । प्रेम की असफलता और अपने साथियों की उन्नति व सम्पन्नता को देखकर उसे अपनी हीन स्थिति पर क्षोभ होता है,इसीलिए वह दुखी,क्लान्त,व्यथित ,सत्रस्त,निराश,कुंठित,एक आईने की तरह शहर में घूमता हैं । वह अपनी पत्नी चन्दा के जिक्र से बचने तथा साली नीला के विरह को भुलाने के लिए दिन भर पूँछ कटे बैल की तरह घूमता है मगर उसे कहीं भी सुख,शांति,तथा चैन नहीं मिलता ।

समाज आर्थिक अभावों के कारण निम्न मध्यवर्गीय जीवन घुटन,कुण्ठा, निराशा,गरीबी,मानसिक असन्तुलन,संकीर्णता और स्वार्थ से भरा पड़ा है । लेखन ने बड़ा,रामदिया,अनन्त,दीसा,दीनानाथ,बिल्ला,जगना,देबू,चाचा फकीरचन्द

आदि - आदि लोगों के माध्यम से उनकी बेकारी अकांक्षाहीनता,अशिक्षा जीवन को सतही ढंग से जीने और अभावों की पूर्ति निमित्त झूठ,फरेब,क्षुद्रता, स्वार्थ परकता को अपना कार्य सिध्द करना दर्शाया हैं । निम्न मध्य वर्ग के जीवन में निराशा और मानसिक असन्तुलन के लिए सामाजिक विकृतियों को ही उत्तरदायी ठहराया हैं । हुनर,शादीराम,महात्मा बाशीराम,सेठ जालंधरी मल योगी व्यक्ति रूप में ही विशिष्ट होते हुए निम्न मध्य वर्ग को भरा-पूरा करने में सहायक हैं ।

निम्न मध्य वर्गीय नारी भी विकृति से ग्रासित हैं । अनमेल विवाह,रोग, गरीबी,अस्थिरता,अशिक्षा,में नारी घर के दायरे में सीमित लड़ाई-झगड़े,निन्दा चुगली,में ही व्यस्त हैं । आर्थिक,अभावों और जातीय-संकीर्णता से अनमेल विवाह होते हैं । जहाँ जीवन तो नारकीय होता है ,साथ में अनैतिकता,भी उभरती हैं । नीला का अनमेल विवाह चेतन के मन को व्यथित कर देता है,इस विवाह के लिए वह स्वयं को उत्तरदायी समझाता हैं ।

चेतन आधे शहर का चक्कर हुनर-निरतर तथा रणवीर के साथ लगाता है । जो लोगों से मिलने चाय-शिकंजी पीने और उर्दू नज्मों को सुनाने तथा अपना उल्लू सीधा करने के उद्देश्य से घूमते फिरते हैं । चेतन भी झल्लाया हुआ उनकी दुम की तरह पीछे-पीछे फिरता हैं । दोस्त हमीद से मिल कर तथा उसने उँचा पद पाने के कारण उसके व्यवहार से चेतन समझाता है कि अब हमीद पहला वाला हमीद नही रह गया हैं । वह उँचा उठ गया हैं । दोस्ती बराबर वालों में होती हैं। चेतन को अपनी हीन दशा पर क्षोभ होता हैं । महात्मा बाशीराम, सेठ जालंधरी मल योगी से मिल कर उन पर व्यंग्य करता है तो लाला गोविन्दराम से मिल कर उनके सच्चे देशप्रेम से प्रभावित होता हैं ।

अन्त में थक कर घर वापिस आता है तो पिता का शोर-शराबा देखता हैं । पिता को सुला कर पत्नी चन्दा के आगोश में शांति पाता है और सोचता है कि जो नही है उसके लिए दु:ख न मनायेगा बल्कि जो है उसी में संतुष्ट होगा ।

पत्नी चंदा को मन की बात कह कर तत्काल लाहौर चला जाने की बात सोचता है और लाहौर जाकर वह अपने सपने को पूर्ण करने की सोचता है ।

शोध-प्रबन्ध का चतुर्थ अध्याय है - चरित्र चित्रण - उपेन्द्रनाथ अश्क चरित्र-चित्रण की कला में सिध्दहस्त उपन्यासकार हैं । यद्यापि उन्होंने वर्णनात्मक प्रणाली को अपनाया है,फिर भी इस प्रणाली के द्वारा पात्रों के आंतर-बाह्य व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने में पूरी सफलता पायी है ।

अश्क जी के पात्र किसी समस्या को लेकर उपस्थित होते हैं और उन्हीं के समाधान के लिए समाज के विभिन्न वर्गों के पात्रों का आयोजन किया है । प्रत्येक पात्र अपने विशिष्ट चारित्रिक गुणों से युक्त है पात्रों के माध्यम से उपन्यासकार जीवन के विभिन्न अंगों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है । सभी पात्र मानव हैं साथ ही हाड-मांस से युक्त जिन्हें हम अपने दैनिक जीवन में अपने चारों ओर देखते हैं । कुछ पात्रों का सृजन दूसरे पात्रों की विशेषताओं की दुर्बलताओं को दिखाने के लिए किया है । प्रत्येक पात्र अपने में महत्वपूर्ण और कथा की आवश्यक कड़ी के रूप में विद्यमान है । अश्क जी अधिकांश स्थलों पर पात्रों की विशेषताएँ, उनका आचार-व्यवहार,वेशभूषा एवं आकृति स्वयं बताते है परंतु ध्यान रखने लायक है कि यह क्रिया अश्क उन पात्रों विशेष को नहीं बताते वरन् केवल पाठकों को बताते हैं । उनके पात्र किसी यंत्र के पुर्जो की भाँति हवा पानी से संचालित नहीं है,वह मानव गत दुर्बलताओं से युक्त व परिस्थितियों से प्रभावित हैं । अश्क जी ने उनके उत्थान पतन में किसी प्रसार की जोर जबरदस्ती नहीं की है। यदि कोई गिर रहा है तो उसे गिरने दिया अगर यदि वह ठोकर खाकर उठ रहा है तो उठने दिया । अश्क जी ने उनके स्वाभाविक विकास में किसी प्रकार की बाधा या सहारा नहीं दिया है ।

अश्क जी के हर पात्र अपनी परिस्थितियों के उपज हैं । देबू,जगना,बिल्ला आदि गुण्डे अपनी अपनी परिस्थितियों से ही गुण्डे बन गये हैं । देबू की माँ लड़ाकी थी । वह अपने पति तक को पीटतीथी । उस माता ने देबू को बचपन से

ही मार-कुट कर लोहा बना दिया था । तो जगना का पिता अनपढ पुजारी था । उसे जुए, शराब की लत थी । उसी वातावरण में पलने के कारण जगना भी आवारा तथा गुण्डा बन जाता है । जिला आठवो, नवीं तथा दसवीं कक्षा में लगातार दो-दो बार फेल होने के फलस्वरुप पढाई छोड कर गुण्डों में रह कर गुण्डाई के गुर सिख गया ।

अभावग्रस्त मुहल्ला, अशिक्षा, गरीबी, भूख और प्यास के कारण कई पात्र पागल, अवारे, व्यभिचारी, अनाचारी, जुआरी आदि बन गये हैं । इन सब के पीछे दूषित वातावरण ही हैं । गरीबी और आर्थिक अभाव के कारण शादी-ब्याह के मामले पेचीदा बन जाते हैं, कई युवक यौन व्याधियों का शिकार बनकर गली-गली भटकते हुए नजर आते हैं । चेतन के दादा के तीनों भाई पागल थे । चुनीलाल तो चेतन के समक्ष ही पागल बन कर घूमता था । रामादिवा भी परिस्थितियों के चक्र में फँसकर पागल बन जाता है । फत्तूराम, बद्दा, जगत आदि पात्र पागल हो थे और इनके पागल पन का उत्तरदायित्व भी विषम सामाजिक परिस्थितियाँ एवं दम घोट वातावरण ही था ।

इसके साथ-साथ लुच्चे, लफंगे, शोषक आदि पात्र भी हैं । कवि रामदास जैसे शोषक, योगी, जालंधरी मल और लाला बांशीराम जैसे ढोंगी तो कवि हुनर जैसे लुच्चे - लफंगे पात्र भी हैं । लाला गोविन्दराम जैसे सच्चे देश भक्त भी हैं । लाला अमरनाथ, लालू, हरसरन जैसे श्रमशील युवक भी है । हरलाल और चाचा फकीरचन्द जैसे सच्चे दोस्त भी है । चेतन की माँ जैसी पतिनिष्ठ नारी भी है जो पति के अत्याचारों को पूर्व जन्म का कर्म फल समझकर चूपचाप सहती है । पं. शादीराम जो घर फूँक तमाशा देख वाले पात्र भी हैं । समाज में चारों ओर नजर आनेवाले हर टाईप के पात्र दिखायी देते हैं और इनका चरित्र - चित्रण करने में अश्क जी पूर्ण रूप से सफल बन गये हैं ।

शोध-प्रबन्ध का पंचम अध्याय है ' शहर में घूमता आईना ' औपन्यासिक कला की दृष्टि से । इस पाँचवे ' अध्याय में कथावस्तु, पात्र और चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, भाषा, शैली, देशकाल और वातावरण तथा उद्देश्य आदि पर विचार

किया गया है ।

कथावस्तु के अंतर्गत उपन्यास की कथा को सार रूप में देते हुए कथावस्तु के विविध गुणों पर भी विचार किया गया है । कथानक में सुसंगठन का महत्व, कथानक में मौलिकता, कथानक में रोचकता आदि के बारेमें संक्षिप्त रूप में लिखा है । कथानक के विकास में सुसंगठन, मौलिकता, रोचकता, आदि गुण किस तरह सहायक होते है और इन्हीं सभी गुणों के मिलाप के कारण उपन्यासकी कथावस्तु प्रभावशाली बन जाती है ।

पात्र और चरित्र-चित्रण के अंतर्गत उपन्यास के प्रमूख पात्र उनकी विशेषताएँ, उनकी वेश-भूषा, रहन-सहन, तथा पात्रों के रूप को प्रकट किया है। अश्क के सभी पात्र हाड मांस के है । मानवीय सबलता तथा दुर्बलता उनमें पायी जाती है । उनके सभी पात्र हमारे चारों ओर के परिवेश में पाये जाते है । इन्हीं पात्रों का चरित्र-चित्रण अश्क जी ने यथार्थ की भावभूति पर किया है । इनके पात्र समाज के मुख्य अंग होते हुए भी व्यक्ति प्रधान है । प्रत्येक पात्र अपने आप में महत्व पूर्ण है ।

उपन्यास में यदि कथानक को प्राण कहाँ गया है तो उसी में सजीवता लाने का काम कथोपकथन अथवा संवाद के द्वारा होता है । पात्रों के चरित्र-चित्रण में कथोपकथन का अपना विशेष स्थान है । उपन्यास के पात्र यथार्थ जीवन से लिए जाते है और उनकी बोलचाल की भाषा को भी जीवन से संबंधित किया गया है । पात्रों के कथोपकथन स्वाभाविक एवं प्रभावशाली हो और साथ ही साथ पाठकों के हृदय पर अपनी छाप छोड सके ।

उपन्यास के विकास में भाषा का भी अपना विशेष महत्व है। उपन्यास की भाषा कथा, काल और पात्रों के अनुरूप ही होनी चाहिए । उच्च शिक्षित पात्र और देहाती की भाषा में पर्याप्त अन्तर होता है । अश्क जी की भाषा भी इसी के अनुकूल ही है । उनके उपन्यास में पंजाबी, उर्दू, और अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग पाया जाता है । अश्क जी की भाषा के प्रयोग में विशेष

सफलता मिली है । भाषा के साथ साथ शैली का भी अपना महत्व है । अश्क जी ने ' शहर में घूमता आईना' उपन्यास संस्मरणात्मक शैली में लिखा है। नायक चेतन दिन भर भटकते हुए जिस किसी के भी पास जाता है उसी का चित्र संस्मरण रूप में चित्रित करता है । अश्क जी ने संस्मरणात्मक शैली में लिखा यह उपन्यास अद्वितीय बन गया है ।

कोई भी लेखक अपने युग तथा परिवेश से अलग नही हो सकता । उसके कृति में देशकाल तथा वातावरण का चित्र अवश्य ही झलकता है । प्रस्तुत उपन्यास में स्वतंत्रता पूर्व की स्थिति और जालंधर शहर के कल्लोवानी मुहल्ला उनमें बसने वाले निम्न मध्य वर्गीय परिवार तथा वहाँ का वातावरण इसी उपन्यास पर छा गया है । लेखक ने पूरे परिवेश का चित्रण यथार्थ रूप मेंकिया है ।

लेखक का कृति-निर्माण के पीछे अवश्य ही कुछ न कुछ उद्देश्य रहता है । बीना उद्देश्य के वह लेखनी उठा ही नहीं सकता । अश्क जी को सामाजिक आडम्बरों से घृणा थी । उन्होंने गरीबी,बेकारी,भूख,प्यास,अशिक्षा,अज्ञान, अंधश्रध्दा,अनमेल विवाह ,व्यभिचार ,स्वार्थ आदि पर प्रकाश डाल कर उनका यथार्थ चित्रण करके समाज को गति तथा नयी दिशा देना प्रमूख उद्देश्य रहा है । और इसी उद्देश्य तथा यथार्थवादी चित्रण में लेखक सफल बन गया है । अश्क जी ने इस' शहर में घूमता आईना' उपन्यास में यथार्थवादी लेखक के दायित्व को निभाते हुए मध्यवर्गीय समाज का चित्रण प्रस्तुत किया है ।